बहु–सांस्कृतिक और बहुजातीय समाज में शिक्षक की भूमिका

*डॉ. अमिता बिहान

शोध सारांश

मैकाइवर एवं पेज (1949) जहां जीवन है वही समाज है व्यक्ति और समाज में पारस्परिक निर्भरता पाई जाती है, व्यक्ति ने एक दूसरे के साथ सामाजिक सम्बन्ध स्थापित कर समाज के निर्माण एवं विकास में सहायता प्रदान की है। वही समाज ने व्यक्ति का समाजीकरण कर उसके व्यक्तित्व विकास में योग दिया है। सभ्यता एवं संस्कृति के आधार पर समाज को कई वर्गों में विभाजित किया गया है। इस प्रकार समाज में हर व्यक्ति को अपनी एक निजी सामाजिक स्थिति प्रदान हो गयी। प्रस्तुत शोध अध्ययन गुणात्मक शोध उपागम पर आधारित है, जिसका प्रमुख उद्देश्य हमारे बहु–सांस्कृतिक और बहुजातीय समाज में शिक्षक की भूमिका को ज्ञात करना है। वर्तमान समय में बहु–सांस्कृतिक और बहुजातीय समाज में शिक्षक की भूमिका परम्परागत समाज से बिल्कुल अलग होती है। सामाजिक परिवर्तन समाज शास्त्र का मुख्य विषय है। बहु–सांस्कृतिक और बहुजातीय समाज में शिक्षक का दायित्व होता है कि वह शिक्षण का ऐसा वातावरण निर्मित किया जाना चाहिये जिससे विद्यार्थी को अपनी योग्यता, क्षमता, मानसिक स्तर तथा आत्मकौशल के अनुसार अपना सर्वांगीण विकास कर सके। इसी आधार पर प्रस्तुत शोध अध्ययन में यह जानने का प्रयास किया गया है कि बहु–सांस्कृतिक और बहुजातीय समाज में शिक्षक किन–किन भूमिकाओं का निर्वाह करता है।

प्रस्तावना :–

फेयरचाइल्ड के अनुसार ''भूमिका किसी भी व्यक्ति का समूह में वह अपेक्षित कार्य या व्यवहार है जो समूह या संस्कृति द्वारा परिभाषित किया गया है।''

बहु–सांस्कृतिक से तात्पर्य सांस्कृतिक विविधता अथवा सांस्कृतिक बहुलता से है। दूसरे शब्दों में एक ही साथ सभी संस्कृतियों का सम्मान करना तथा संवैधानिक रूप से उन्हें बराबर का स्थान देना बहुसांस्कृतिकता का आधार है। कोई भी देश तभी बहुसांस्कृतिक कहलाता है जब वह अपने यहां उपस्थित लगभग सभी संस्कृतियों को समान महत्व देता है, अर्थात कोई भी एक संस्कृति किसी अन्य पर हावी न हो, और न ही उसके विशालकाय स्वरूप में तथाकथित छोटी संस्कृतियां लुप्त हो जाये।

स्पष्ट तौर पर कहा जा सकता है कि बहुसांस्कृतिक और बहुजातीय राष्ट्र वह है जिसकी सीमा में सभी उपलब्ध संस्कृतियां अपने पूर्ण अस्तित्व के साथ बनी रहती है। समाज में सांस्कृतिक बहुलता एक ऐसे व्यवस्था की ओर इशारा है जहां विभिन्न विश्वास, धर्म और भाषा आदि के लोग एक साथ रहते है, पिछले कुछ दशकों में यह बहुसांस्कृतिकता एक राजनीतिक विचार बनकर उभरी है, "What is multicultural" नामक शीर्षक में भीखू पारेख ने बहुसांस्कृतिकवाद को एक दार्शनिक सम्प्रदाय या कार्यक्रमोन्मुख राजनीतिक सिद्धान्त मानने की बजाए मानव जीवन को देखने का एक तरीका या नजरिया बताया है।

बहुसांस्कृतिकता के अन्तर्गत केवल संस्कृति और सांस्कृतिक–समूह को ही मान्यता नहीं देनी चाहिये, अपितु इस

दायरे में धर्म, भाषा, वर्ण, राष्ट्रीयता और नस्ल से सम्बन्धित तथ्यों का भी महत्व है। भारत अनेक भाषाओं और जातियों का देश है। भारत में धार्मिक तथा जातीय विविधता पाई जाती है। भारत की सांस्कृतिक बहुलता कोई नवीन प्रक्रिया नहीं है। इसकी विशाल ऐतिहासिकता है। भारतीय संस्कृति अत्यन्त प्राचीन है और विभिन्न लोगों के बीच संवाद और सम्पर्क परिणाम है। इस प्रकार भारतीय संस्कृति ऐसी संस्कृति रही जिसने सभी तत्वों को आत्मसात करने का प्रयास किया जो इसके सम्पर्क में आये।

बहुजातीय समाज में ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य, शुद्र पर आधारित चार वर्गीय विभाजन का परिणाम कई जातियों के रूप में हुआ। विभाजन का यह स्वरूप ऋग्वेद के दशम मण्डल में वर्णित है। आज भारत में अनेक जातियां है, और जाति से तात्पर्य एक ऐसे अनुवांशिक समूह से है, जो एक विशेष पारम्परिक व्यवसाय का अनुसरण करता है।

शिक्षक समाज में उच्च आदर्श स्थापित करने वाला व्यक्तित्व होता है। किसी भी देश का समाज के निर्माण में शिक्षक की अहम भूमिका होती है। कहा जाय तो शिक्षक समाज का आइना होता है। हिन्दू धर्म में शिक्षक के लिये कहा गया है कि आचार्य देवो भवः यानी कि शिक्षक या आचार्य ईश्वर के समान होता है। यह दर्जा एक शिक्षक को उसके द्वारा समाज में दिये गये योगदानों के बदले स्वरूप दिया जाता है। शिक्षक का दर्जा समाज में हमेशा से ही पूज्यनीय रहा है। जिसका योगदान किसी भी देश या राष्ट्र के भविष्य का निर्माण करना है। शिक्षक ही अपने विद्यार्थी का जीवन गढता है। और शिक्षक ही समाज की आधारशिला है। एक शिक्षक अपने जीवन के अन्त तक मार्गदर्शक की भूमिका अदा करता है, और समाज को रहा दिखाता रहता है। विद्यार्थी शिक्षक से जैसा सीखता है, वैसे ही व्यवहार वह करता है। उसकी मानसिकता भी कुछ वैसे ही बन जाती है। जैसा वह अपने आस–पास होता देखते है। इसलिये एक शिक्षक या गुरू ही अपने विद्यार्थी को आगे बढने के लिये प्रेरित करता है। विश्व में केवल भारत ही ऐसा देश है, यहां पर शिक्षक अपने शिक्षार्थी को ज्ञान देने के साथ–साथ गुणवत्तायुक्त शिक्षा भी देते है, जो कि एक विद्यार्थी में उच्च मूल्य स्थापित करने में बहुत उपयोगी है। किसी भी राष्ट्र का आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, विकास उस देश की शिक्षा पर निर्भर करता है।

शिक्षक की भूमिका :–

बहुसांस्कृतिक और बहुजातीय समाज में शिक्षक बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखती है। शिक्षक की भूमिका ऐसी होनी चाहिये, जिससे समाज की युवा पीढी का समन्वित विकास हो सके। बहुसांस्कृतिक और बहुजातीय समाज में अनेक ऐसे गुणों का समावेश होना अति आवश्यक है, जिससे समाज का अच्छा भविष्य बनाया जा सके।

शिक्षक–रोल मॉडल :–

यह शिक्षक की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका है। एक रोल मॉडल वह व्यक्ति होता है, जिसके व्यवहार की नकल दूसरो द्वारा की जाती है, और सीखना एक नकल करने की प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति अपने व्यवहारों या दूसरो (शिक्षक) की नकल करता है, अर्थात शिक्षक छात्रों का एक रोल मॉडल होता है, एक रॉल मॉडल के 7 सकारात्मक विशेषतायें हो सकती है।

1. सकारात्मक विकल्प बनाना
2. नैतिक मूल्य (जैसे – इमानदारी विश्वास आदर)
3. अनुशासन
4. जवाबदेही

5. प्रतिबद्धता
6. समर्पण
7. समन्वित व्यक्तित्व
8. उच्च विचार

शिक्षक की भूमिका दिन–प्रतिदिन शिक्षा की प्रणाली के पुननिर्माण हेतु बढती ही जा रही है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 के अनुसार, शिक्षक की स्थिति किसी समाज के सामाजिक सांस्कृतिक लोकाचार को दर्शाती है, अर्थात कहा जाता है कि कोई भी व्यक्ति अपने शिक्षकों के स्तर से ऊपर नहीं उठ सकता है।

ए. पी. जे. अब्दुल कलाम के अनुसार, अगर किसी देश को भ्रष्टाचार मुक्त होना है, और सुन्दर मस्तिष्कों का देश बनाना है तो मुझे दृढता से लगता है कि तीन प्रमुख सामाजिक सदस्य है जो फर्क कर सकते हैं, वह पिता, माता और शिक्षक है। उभरते और बदलते हुये भारतीय समाज को एक सीखने वाला समाज होना चाहिये। हमें साक्षर, शिक्षित और शिक्षार्थी बनना होगा। बहुसांस्कृतिक और बहुजातीय समाज में शिक्षक की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। नई सदी वैश्वीकरण, तकनीकी, नवाचार और वैज्ञानिक की है।

एक गाइड मार्गदर्शक के रूप में :–

एक मार्गदर्शक वह होता है, जो अपने जीवन काल में दूसरों का निर्देशन करता है, उन्हें लक्ष्य को दिखलाना और इसे लक्ष्य प्राप्त करने का तरीका और उसे अपने साथ लेकर लक्ष्य तक ले जाना होता है।

शिक्षक एक दोस्त के रूप में :–

शिक्षक की भूमिका छात्र के दोस्त के रूप में काम करना है। स्वामी विवेकानन्द कहते है, ''सच्चा शिक्षक वह है जो तुरन्त छात्र के स्तर पर उतर सकता है, और अपने दिमाग के माध्यम से देख और समझ सकता है। शिक्षक का यह दयित्व बनता है कि वह कक्षा का वातावरण सभी के लिये सुखद औ मित्रवत बनाये रखे। जिससे विभिन्न सामाजिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से सम्बन्ध रखने वाले विद्यार्थी अपनी–अपनी समस्या का निराकरण बिना किसी झिझक के और बिना किसी भेदभाव के कर सके। शिक्षक को विद्यार्थियों की समस्याओं के समाधान में उन्हें इस योग्य बनाया जाये, जिससे वह अपनी समस्या का समाधान स्वयं करने में सक्षम हो सके।

शिक्षा के अनुभव परामर्शदाता के रूप में :–

शिक्षक बालक के संरक्षण या परामर्शदाता के रूप में कार्य करता है, वह व्यक्ति को अपनी छिपी प्रतिभाओं और रूचि को बाहर लाने में मदद करता है, जिसका उसके जीवन पर बहुत प्रभाव पड़ता है।

अच्छा वक्ता तथा नेतृत्वकर्ता :–

एक शिक्षक में यह गुण प्रमुख रूप से होना चाहिए। वह अपनी बात को छात्रों तक उसी रूप में पहुंचायें जिस रूप में वह छात्रों के लिये ग्रहण हो, शिक्षक को अपने प्रभावशाली शब्दों का प्रयोग करना चाहिये और वाकपटु होना चाहिये। जिसके माध्यम से कक्षा के वातावरण को रोचक पूर्ण बनाया जा सके। शिक्षक छात्रों को सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा व्यवसायिक सभी क्षेत्रों से सम्बन्धित निर्देशन प्रदान कर छात्रों को उचित मार्ग की ओर अग्रसारित करना चाहिये।

शिक्षक एक सूत्रधार के रूप में :–

शिक्षा के नये दृष्टिकोण में शिक्षकों को सीखने की सुविधा के रूप में कार्य करना होता है, शिक्षक को छात्रों को प्रेरित करना, चर्चा और बहस करने के लिये प्रोत्साहित करना होता है साथ ही प्रयोगशालाओं कार्यक्षेत्र और चर्चा संगोष्ठीओं आदि जैसी तकनीकों और विधियों को छात्रों के बीच विकसित किया जाना चाहिये।

प्रजातांत्रिक/संवैधानिक मूल्यों का पोषक :–

बहुसांस्कृतिक और बहुजातिय समाज से सम्बन्धित छात्रों को उनकी रूचि योग्यता तथा क्षमता के अनुरूप शिक्षा के समान अवसर उपलब्ध कराने हेतु शिक्षक को सभी छात्रों को आगे बढने तथा अपनी रूचि योग्यता तथा क्षमता के अनुरूप शिक्षा प्राप्त करने के अवसर उपलब्ध कराने चाहिये। कक्षा में शिक्षक को यह विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिये, कि वह सिर्फ किसी संस्कृति विशेष तक शिक्षा की सुलभता प्रदान न करें, बल्कि सभी सामाजिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से आये हुये छात्रों तक शिक्षा के समान अवसर उपलब्ध करायें।

शिक्षक व्यवसाय के प्रति जावबदे :–

अच्छे शिक्षक की प्रमुख विशेषताओं में से एक उसका शिक्षण व्यवसाय के प्रति जवाबदेह होना है। शिक्षक का दायित्व बनता है कि वह कक्षा में नियत समय पर उपस्थित हो। जिससे छात्र भी शिक्षक से प्रेरित होकर समय से कक्षा में उपस्थित हो। शिक्षण के दौरान कक्षा में शिक्षक द्वारा किया गया शिक्षण कार्य तर्कपूर्ण हो, और वास्तविकता के धरातल पर प्रासंगिक हो बहुसांस्कृतिक परिवेश में विभिन्न संस्कृतियों से सम्बन्ध रखने वाले छात्रों को उनकी सामाजिक–सांस्कृतिक आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा प्रदान हो रही है या नहीं हो रही है। यह जिम्मेदारी शिक्षक की होनी चाहिये और उसे अपने कर्तव्यों के प्रति जवाबदेह होना चाहिये। शिक्षक का यह कर्तव्य बनता है कि वह विभिन्न संस्कृतियों से जुड़े छात्रों को उचित निर्देशन एवं परामर्श प्रदान कर उनकी समस्याओं के समाधान में सहयोग करे। जिससे कि छात्र एकाग्रचित होकर अध्ययन कर सके। शिक्षक को चाहिये कि वह सभी संस्कृतियों से जुड़े विद्यार्थियों को बिना किसी भेदभाव के निर्देशन एवं परामर्श प्रदान कर शिक्षा प्रदान करे। यह सभी कार्य शिक्षण की गुणवत्ता पर निर्भर करता है, जिसके प्रति शिक्षक को जवाबदेह होना चाहिये।

वातावरण को रोचक बनाये रखना :–

विभिन्न सामाजिक पृष्ठभूमि से आये हुये छात्र जब एक जगह एकत्र होकर शिक्षा प्राप्त करने की दौड़ में सम्मिलित होते है, तो धीरे–धीरे विषय से सम्बन्धित गम्भीरता से छात्र में उब उत्पन्न होने लगती है, जिससे छात्रों की एकाग्रता भंग होती है, और शिक्षक द्वारा शिक्षण की प्रक्रिया के दौरान सिखाये गये पार्ट पर भी उचित सफलता नहीं प्राप्त होती है। क्योंकि लगातार पढ़ाने से कक्षा का वतावरण नीरस होने लगता है। कक्षा के वातावरण को रोचक बनाये रखने के लिये तथा छात्रों में रूचि उत्पन करने के लिये यह आवश्यक होता है। किस शिक्षक द्वारा शिक्षण कार्य करते समय व्यख्यान के बीच में विषय विशेष से सम्बन्धित कुछ रूचिपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करके छात्रों का ध्यान विषय की ओर बनाये रखें। छात्रों में विषय में नीरसता उत्पन्न न हो इसलिये आवश्यक है कि शिक्षक शिक्षण के दौरान कुछ हास्य प्रसंग भी बताता रहे। किन्तु बहुसांस्कृतिक और बहुजातीय परिवेश में कक्षा में किसी भी प्रकार की विनोदपूर्ण बात कहने से पूर्व इस विषय पर अवश्य ध्यान रखना चाहिये किय विभिन्न सामाजिक पृष्ठभूमि और संस्कृति से जुड़े छात्रों को विनोदपूर्ण में कही गई कोई बात उनकी अपनी संस्कृति से जुड़ी ना हो, जिससे कि उन्हें कोई ठेस पहुंचे।

निष्कर्ष :–

सारांशतः प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि बहुसांस्कृतिक और बहुजातीय समाज में विभिन्न परिवेश तथा पृष्ठभूमि के छात्र शामिल होते है, तो ऐसे में शिक्षक का दायित्व और अधिक बढ़ जाता है। शिक्षक की भूमिका ऐसी होनी चाहिये, जो सभी को समानता की दृष्टि से देखने और सभी धर्मों, जातियों, भाषाओं, संस्कृतियों को समझने और इस समाज में सभी को साथ लेकर चलने की सोच को पैदा कर सके, ताकि कोई भी किसी के साथ किसी भी प्रकार से भेदभाव का व्यवहार न कर सके। बहुसांस्कृतिक तथा बहुजातीय समाज में बहुसांस्कृतिक शिक्षा को बढावा देना चाहिये। शिक्षक विद्यार्थियों का सम्पूर्ण विकास तभी कर सकता है, जब वह स्वयं विभिन्न संस्कृतियों से परिचित हो, जिससे शिक्षक शिक्षण के दौरान वहां की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर शिक्षण कार्य सम्पन्न कर सके। बहुसांस्कृतिक कक्षा में शिक्षक को किसी क्षेत्र विशेष के विद्यार्थियों पर पूरा ध्यान नहीं देना चाहिये, अपितु सभी पृष्ठभूमि से आये विद्यार्थियों को उनकी रूचि, क्षमता, योग्यता के अनुरूप समान रू॰ से शिक्षा प्रदान करनी चाहिये। उभरते और बदलते भारतीय समाज को एक सीखने वाला समाज होना चाहिये, जिससे हमारा मस्तिष्क हमेशा सीखने की ओर अग्रसर रहेगा। इसमें शिक्षक की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। नई सदी तकनीकी, और वैज्ञानिक विकास का युग है, जिससे शिक्षा के क्षेत्र में चमत्कारिक रूप से परिवर्तन हो रहे है। ऐसी स्थिति में ज्ञान प्रदाता के रूप में शिक्षक की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। शिक्षक का यह दायित्व बनता है कि वह आवश्यकतानुसार छात्रों निर्देशन करता रहे तथा छात्रों के साथ मित्रवत व्यवहार बनाये रखे। एक शिक्षक ही छात्र का जीवन गढ़ता है, इसलियें बहुसांस्कृतिक और बहुजातीय समाज में शिक्षक को किसी भी प्रकार की रूढ़ियों से बचना चाहिये। तथा छात्रों को ऐसी शिक्षा देनी चाहिये, जिससे समाज में व्याप्त भेदभाव की भावना पूरी तहर से खत्म हो सके और कोई भी किसी के साथ किसी भी प्रकार का भेदभाव ना कर सके।

***असिस्टेंट प्रोफेसर**
समाजशास्त्र विभाग
फूल सिंह बिष्ट राजकीय महाविद्यालय
लम्बगांव (टि.ग.)

सन्दर्भ सूची :–

1. Page, and Maclver, “Society an Introductory Analysis”. P - 157.
2. आहूजा, राम, भारतीय समाज, रावत पब्लिकेशन्स (2020)।
3. मैं. डलबम, डी. सोसाइटी इन इंडिया, पोपूलर प्रकाशन, भारतीय पुनर्मुदण, बम्बई (1972)।
4. बाजपेई, एल.बी. (2006) शिक्षा में नवाचार एवं तकनीकी, लखनऊ, आलोक प्रकाशन, पृष्ठ संख्या 249–262।
5. मिश्रा, यू. (2012) शिक्षा का समाजशास्त्र, इलाहाबाद, न्यू कैलाश प्रकाशन, पृष्ठ संख्या 23–38।
6. दूबे, श्यामचरण, भारतीय समाज (2011)।
7. मदान, पूनम, शिक्षा के दार्शनिक परिप्रेक्ष्य, अग्रवाल पब्लिकेशन, (2021)।
8. डॉ शर्मा, सुरेन्द्र कुमार, आधुनिक भारतीय समाज में शिक्षा, डिस्कवरी पब्लिशिंग हाऊस, (2011)।
9. पाठक, रमेश प्रसाद, उदीयमान आधुनिक भारतीय समाज में शिक्षा, विकास पब्लिशिंग हाऊस, (2015)।